B.A - Sem - V

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों का समग्र स्वरूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होता है। यह 'कृ' (करना) धातु से बना है इस धातु से तीन शब्द बनते हैं। प्रकृति की मूल स्थिति, यह संस्कृति हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'culture' शब्द प्रयोग किया जाता है जो लेटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसीत करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संक्षेप में, किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि उसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द 'संस्कृति' संस्कृति का शाब्दार्थ है - उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन - पद्धति, रीति-रिवाज रहन-सहन आचार - विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है सभ्यता 'संस्कृति का अंग है। सभ्यता

B.A - Sem - V

* *

से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगती सूचित होती है जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगती सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते है। इन्हें संतुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते है। मनुष्य की ~~सिद्धा~~ जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते है। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि ~~केवल~~ अनेक कलाओं का उन्नत करता है। सुरक्षापूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनैतिक संघटनों का निर्माण करता है। इस प्रकार मानविक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक कृति संस्कृति का अंग बनती है। इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी विद्याओं और कलाओं सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है।